डॉ० अंग्रेज
वैशाली महिला

Q → वीरगाथा काव्य की विशेषताएँ या प्रवृत्तियाँ उस युग की वे प्रवृत्तियाँ हैं जिनके आधार पर वीरगाथा काल कहा जाता है।

उत्तर – हिन्दी साहित्य का प्रथम काल वीरगाथा काल के नाम से सम्बोधित किया गया। यह काल राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत पतित था। वीरतत्व का स्वर ही इस काल की साहित्य की नवीन देन है। आंतरिक अशांति एवं बाह्य आक्रमण से त्रस्त यह युग अवनति की दिशा की ओर गमन कर रहा था। सामाजिक दृष्टि से दिनहीन एवं धार्मिक दृष्टि से संघर्ष पूर्ण परिवेश की स्थापना इस युग की देन है। इस युग में एक ओर सिद्ध नाथ एवं जैन साहित्य का निर्माण हो रहा था तो दूसरी ओर चारण कवि अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में चारण काव्य का निर्माण कर रहे थे। चारण काव्य की निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ दृष्टव्य हैं —

① आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा एवं राष्ट्रीय भावना का अभाव – इस काल के कविगण राजाओं के आश्रय में रहते हुए और यह आश्रय उन्हें तभी तक था जब तक राजागण प्रसन्न रहें। अतः यह स्वाभाविक ही था कि वे राजाओं की प्रशंसा में उनका यशोगान करते और उनकी वीरता का बढ़ा-चढ़ा कर बखान करते जब आश्रयदाता को ही प्रसन्न करना कवि का उद्देश्य हो जाए तो निश्चय ही कवि अप्रिय सत्य को भी छिपाना चाहता है और उसे प्रसन्न करने के लिए उनका झूठा यशोगान करता है। वीरगाथा कालीन राजाओं की नीति और क्रिया कलाप देश के हित में न होकर अहित में था उन्हीं के द्वारा प्रज्वलित अग्नि में देश की स्वतंत्रता जल कर भस्म हो गयी। फिर भी चारण कवियों ने उनका यशोगान जारी रखा। इसी युग में भट्ट केदार ने जयचंद की प्रशंसा में जयचन्द प्रकाश लिख डाला। इस युग में केन्द्रिय शक्ति का पूर्ण अभाव था इस काल के चारण कवि आश्रयदाता की प्रशंसा तो आवश्यक मानते थे।

परंतु उनमें राष्ट्रीय भावना का पूर्णतया लोप था। देश तथा राष्ट्र के अस्तित्व की चिन्ता उन्हें नहीं थी वे अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए राजाओं की झूठी प्रशंसा करते थे तथा उनके प्रत्येक कृत्य के अर्थहि समर्थन में ही अपना कल्याण समझते थे।

(२) संदिग्ध रचनाओं का प्राचुर्य — इस काल में रचित चार काव्य प्राप्त हुए हैं — ① खुमाण रासो ② बीसलदेव ③ पृथ्वीराज तथा ④ परमाल रासो। भाषा शैली और विषय सामग्री की दृष्टि से इन ग्रन्थों के बारे में यह कहा जा सकता है कि इनमें निरंतर कई शताब्दियों तक परिवर्तन एवं परिवर्द्धन होते रहे जिससे उनका मूलरूप ही बदल गया। खुमाण-रासो में 16वीं शताब्दी तक की रचनाओं का समावेश कर लिया गया है। परमाल रासो तथा पृथ्वीराज रासो का भी मूल-रूप बहुत बदल हुआ है। अतः इन ग्रन्थों के मूल रूप की पहचान अत्यंत दुष्कर कार्य हो गया है। इस काल में कवियों का काम था युद्ध-रत सैनिकों का उत्साह बढ़ाना। इसी कारण वे युद्ध के मैदान में या दरबार में भी स्वरचित पद सुनाया करते थे। इस काल का साहित्य प्रायः गेय था इसकार लोग उसको सुनते थे और याद कर लिया करते थे इस प्रकार इस काल का बहुत सा साहित्य इसी रूप में चलता रहा और कालांतर में जब उसे लिखा गया तो इस साहित्य में अन्य प्रांतों की शब्दावली का भी समावेश हो चुका था। अन्य कवियों द्वारा रचित छंद उसमें स्थान पा गए थे और इस कारण उसका मूलरूप विकृत हो गया था। अतः इसी कारण इन रचनाओं को असंदिग्ध ठहराया गया है।

Scanned with CamScanner

(3) चारण-काल में ऐतिहासिकता का अभाव → चारण साहित्य में ऐति का अभाव है। जिसके अनेक कारण हैं। ये कवि चाटुकारिता के लिए अपने आश्रयदाताओं का झूठा यशोगान करते थे। ऐसे झूठे यशोगान के लिए और अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए वे ऐतिहासिक तथ्यों की अवहेलना की गयी जब कभी चाटुकारिता की दृष्टिकोण से अपने चरित नायिकों का वर्णन करता है तो वह उनकी प्रसन्नता के लिए अप्रिय ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन नहीं करेगा। इस काल के रचनाओं के नायक यद्यपि इतिहास प्रसिद्ध फिर भी उनका वर्णन शुद्ध इतिहास की कसौटी पर पूरा नहीं उतरता है इन कवियों द्वारा दिए गए संवत और तिथियाँ इतिहास से मेल नहीं खाती, न ही उनका मेल संस्कृत काव्यों में दिए गए संवतों और घटनाओं से ही ठीक बैठता है। इतिहास के विषय को लेकर चलने वाले कवि में जिस सावधानता की आवश्यकता होती है वह उनमें नहीं है इसके साथ ही उन्होंने आश्रयदाता का वैभव प्रदर्शित करने के निमित्त उसका विवाह किसी बड़े ऐतिहासिक व्यक्ति के पुत्री से करवा दिया। जैसे वीरसदेव रासो में वीसलदेव का विवाह राजा भोज की पुत्री के साथ हुआ था जबकि राजा भोज वीसलदेव से [illegible] वर्ष पूर्व ही हो चुके थे।

(4) युद्धों का यथार्थ वर्णन → वीरगाथा काव्य का प्रमुख विषय युद्धों का यथार्थ चित्रण है। वीररस से भरी हुई पदावली में जिन भावों को भरने की चेष्टा की गई है वह अद्वितीय है। वीरगाथाकालीन कवि केवल मसि और लेखनी को ही अपनी जीविका का साधन नहीं समझता था